Publication: Nav Bharat
Date: 5/5/2019
Page: 7
Column: 2-3

नवभारत
मुंबई
मुंबई, 5 मई 2019

बिजली से जगमग हुआ जामझाड़ पाड़ा

कार्यालय संवाददाता
मुंबई. 24 घंटे बिजली की चमक से रौशन मुंबई से सटे गोराई गांव में बसे आदिवासियों का जामझाड पाड़ा अब तक रोशनी से दूर था. आजादी के 71 साल बाद शुक्रवार को यहां बिजली पहुंची और हर घर बिजली के दीपों से जगमगा उठा. पारंपरिक वाद्य बजा कर आदिवासियों ने बिजली का स्वागत किया. डेढ़ वर्षों के अथक प्रयास के बाद यहां बिजली पहुंचने से आदिवासियों की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा है.

आजादी के 71 साल बाद पहुंची बिजली

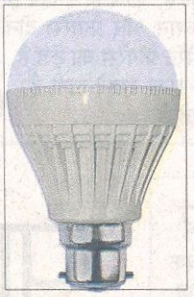

1 भाईंदर से समीप गोराई मार्ग से तीन किमी अंदर एक छोटी सी पहाड़ी के पास मौजूद जामझाड बस्ती में करीबन दो सौ लोग रहते हैं. देश की आर्थिक राजधानी से सटे हुए इस आदिवासी इलाके में आज भी पानी, बिजली, शिक्षा, अस्पताल जैसी मुलभूत सुविधाएं नहीं हैं.

2 इस इलाके के मोठी डोंगरी, छोटी डोंगरी , मुंडा पाड़ा , बाबर पाड़ा , बोरकरपाड़ा जैसी आदिवासी इलाकों में 2003 में बिजली आ गयी थी. लेकिन जामझाड पाड़ा को फिर भी बिजली नसीब नहीं हुई. चुनाव आने पर बिजली, पानी जैसी सुविधाएं देने का आश्वासन राजनैतिक पार्टियों द्वारा लोगों को दिया जाता था. चुनाव आते-जाते गए, लेकिन यहां बिजली नहीं आयी.

3 पढाई के लिए गोराई या मनोरी गांव में जाना पड़ता है. जिसके लिए यहां से 3 किलोमीटर पैदल और उसके बाद अगर मिला तो वाहन से स्कूल का रास्ता तय होता है. कोई बीमार पड़ गया तो इलाज के लिए भी गोराई या उन्नत गांव में जाना पड़ता है. मजदूरी कर यहां के आदिवासी अपना जीवन यापन करते हैं. उसमे भी कभी किसी को रोजगार मिलता है तो कभी किसी को नहीं.